ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन और हिंदी स्त्री- लेखन

डॉ. अरुण प्रसाद रजक

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,

गोरुबथान गवर्नमेंट कॉलेज, कलिम्पोंग

पश्चिम बंगाल, भारत

सारांश :

सन् 1857 से 1947 तक का समय साहित्य और स्वाधीनता आन्दोलन की दृष्टि से एक उल्लेखनीय कालखण्ड है। साहित्य, कला और संस्कृति के क्षेत्र में इन दौरान भारतीयों ने जो महत्वपूर्ण कार्य किये, उनमें स्त्रियों का योगदान भी कम महत्वपूर्ण नहीं था। उनका मूल स्वर साम्राज्यवयवादी ताकतों से लोहा लेने वाला ही था। स्वदेशी आन्दोलन को पूर्णता प्रदान करने में वे कभी पीछे नहीं रहीं। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान महिलाओं ने अपने लेखन में गंभीर राजनीतिक चेतना का परिचय दिया. उनके लेखन के दो महत्वपूर्ण छोर थे। एक, भारतीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति की विवेचना करना, और दूसरा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के परिदृश्य पर नजर बनाए रखना। उपनिवेशकालीन भारतीय स्त्री-विमर्श की विशिष्टता यह है कि उसमें स्त्री जागरण व्यापक राष्ट्रीय सरोकारों का हिस्सा बनकर आया है।

बीज शब्द: *आन्दोलन, सामाजिकता, पितृसत्ता, प्रतिवाद, राष्टवाद.*

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

आलेख:

सन् 1916 से 1935 तक का समय प्रेमचन्द्र के प्रभाव का समय था। उनकी कहानियों में मौजूद आदर्शोनमुखी यथार्थवाद, परवर्ती लेखकों में फार्मूला की हद तक अपनाया गया। हिन्दी कहानी पर इस कालखंड में गाँधीवाद, मार्क्सवाद और फ्रॉयडवाद का भी प्रभाव देखा गया। उषा देवी मित्रा, कमला चौधरी और सत्यवती मलिक ने कहानी के विकास को इस दौर में सार्थक योगदान किया। उनकी रचनाओं में सामाजिक समस्याओं के साथ मनोवैज्ञानिक पक्ष भी व्यक्त हुआ। उन्नीसवीं सदी के अंत से लेकर बीसवीं सदी की शुरुआत आधुनिक लघुकथा शैली के विकास में एक महत्वपूर्ण अवधि है। भारत में प्रिंटिंग प्रेस के आगमन और शिक्षा के प्रसार से इस शैली की बड़ी संख्या में लोगों तक पहुंच आसान हो गई। आधुनिक लघुकथा का उदय भारत में

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

राष्ट्रवादी आंदोलन के उभार के साथ हुआ। इस शैली ने कई लेखकों को अपनी राष्ट्रवादी भावनाओं को व्यक्त करने और उस समय के प्रासंगिक सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा करने का अवसर प्रदान किया। कई महिला लेखिकाओं ने भी महिलाओं की शिक्षा, पितृसत्तात्मक उत्पीड़न, विवाह, तलाक, न्याय आदि जैसी महत्वपूर्ण चिंताओं से जुड़कर इस चर्चा में योगदान दिया। हिंदी साहित्य की दो अभूतपूर्व लघुकथाओंहोमवती देवी क - ी 'अपना घर' और महादेवी वर्मा की 'लछमा' की व्यापक चर्चा के माध्यम से। दोनों कहानियों की तुलना करके, यह सामान्य रूप से महिलाओं की स्थिति और समकालीन समय में इन मुद्दों की प्रासंगिकता को समझने का भी प्रयास करती है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य का स्त्री–काव्य उपेक्षिता का काव्य है। सामान्यत: इसे विवेचना के योग्य नहीं समझा गया है। आधुनिक काल की लेखिकाओं की कविताओं पर गौर करें तो पाएंगे कि इसमें सामाजिक, राजनीतिक प्रक्रियाओं और आंदोलन की गहरी छाप मिलती है। स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की समान भागेदारी थी। लाला भगवानदीन की पत्नी बुन्देल बाला से लेकर सुभद्राकुमारी चौहान तक जैसे इतिहास से ओझिल लेखिकाओं में राष्ट्रीय भावना और नारी-जागरण की जुगलबंदी देखी जा सकती है। होमवती देवी, सत्यवती शर्मा, रणछोर कुंवरि, तारा पांडे आदि अनेक रचनाकार हैं, जिनकी लेखन परंपरा का स्थान इतिहास में अंकित नहीं हुआ है। ये स्त्रियां अपने लेखन के माध्यम से पुरुषवादी इतिहास में सेंध लगाती है। इन स्त्री लेखिकाओं की उपस्थिति से इतिहास का ढांचा ही कुछ और हो जाता है। राष्ट्रीय नवजागरण एवं आधुनिकता का स्वागत स्त्री लेखिकाओं ने जोशो-खरोश के साथ किया है।

आधुनिक काल में स्त्री-चिंतन की शुरुआत को नवजागरण के परिप्रेक्ष्य देखा जाता है। नवजागरण की पृष्ठभूमि में अपने अतीत को तलाशने और भविष्य को निखारने के प्रयत्नों ने साहित्य को भी प्रभावित किया। नवजागरण और आधुनिकता की प्रभात बेला में स्त्रियों की लेखनी ने अपनी पूरी परंपरा को विकसित किया, किन्तु इतिहासकारों के पुंसवादी नजरिए के कारण न सिर्फ उनकी अवहेलना हुई बल्कि उन्हें साहित्य के इतिहास में ही नदारद बना दिया गया। आधुनिकता के प्रथम चरण में जब पुरुष लेखकों का एक पूरा हुजूम तिलिस्मी उपन्यासों में रोमांच की तलाश में मशगूल था, तब स्त्रियां अपने साहित्य के माध्यम से नए सामाजिक लक्ष्यों की ओर बढ़ रहीं थी। किन्तु इस तरफ अनदेखी की गई और स्त्रियों के महत्वपूर्ण लेखन की नोटिस तक नहीं ली गई।

इतिहासकारों की अनदेखी और पुंसवादी नजरिए के कारण उभरती नयी प्रतिभाओं को साहित्य के इतिहास में न सिर्फ जगह नहीं मिली, अपितु उनके लेखन को लेकर भी कई तरह के भ्रम फैलाये गए। अब तक का सबसे सशक्त और प्रामाणिक माना जाने वाला आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का इतिहास इसका सबसे अच्छा उदाहरण है जिसमें प्रथम महिला कहानीकार बंग महिला को स्थान नहीं मिला। यद्यपि आचार्य शुक्ल ने 'दुलाईवाली' कहानी की मौलिकता को स्वीकार किया है और हिन्दी कथा-साहित्य के विकास में उसके महत्व को समझते हुए भी वह स्वयं को पुरुष पीड़ित नजरिए दूर नहीं रख पाए। यशोदा देवी (स्त्री का साहस), प्रियम्वदा देवी (पुरुष कौन, भारत कब सुखी हो सकता है ? अशिक्षिता और शिक्षिता) जैसे न जाने कितने नामों को इतिहास से मिटा दिया गया। इन

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

नामों में कुछ कथाकारों ने उपन्यास भी लिखे हैं जैसे सरस्वती गुप्त, हमेचंद्र कुमारी चौधरी, ब्रह्मकुमारी और लीलावती। प्रियवंदा, उषादेवी मित्रा, शिवरानी, होमवती देवी तथा सुभद्रा कुमारी चौहान आदि की कहानियों में मध्यवर्ग की त्रासद अवस्थाओं का चित्रण है। इनका मुख्य स्वर दु:खपूर्ण है। क्रांतिकारियों पर उषादेवी मित्रा की कहानियां अपवाद हैं, पर अत्यंत महत्वपूर्ण। डॉ. सुमन राजे के अनुसार उपेन्द्रनाथ अश्क ने उषादेवी मित्रा की कहानियों के बारे में कहा है 'ऐसी कोई पत्रिका नहीं हैं, जिसमें वे न छपती हो।'[1]

19वीं सदी के उत्तरार्द्ध एवं 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध के स्त्री लेखन की विशेषता यह है कि वहां लेखन का प्रतिपक्ष 'पुरुष' नहीं है, जड़ रूढ़ियां हैं जिनके विरुद्ध वे स्वयं भी खड़ी होती हैं और दूसरों को भी खड़ा करने की कोशिश करती हैं। स्त्री-विमर्श की यही पृष्ठभूमि है। यही वह बिंदु है जहां से भारतीय स्त्री-विमर्श पाश्चात्य स्त्री-विमर्श से अलग हो जाता है। भारतीय स्त्री-विमर्श की विशिष्टता यह है कि उसमें स्त्री जागरण व्यापक राष्ट्रीय सरोकारों का हिस्सा बनकर आया है। आधुनिक हिन्दी साहित्य का स्त्री–काव्य उपेक्षिता का काव्य है। सामान्यत: इसे विवेचना के योग्य नहीं समझा गया है। आधुनिक काल की लेखिकाओं की कविताओं पर गौर करें तो पाएंगे कि इसमें सामाजिक, राजनीतिक प्रक्रियाओं और आंदोलन की गहरी छाप मिलती है। स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की समान भागेदारी थी। लाला भगवानदीन की पत्नी बुन्देल बाला से लेकर सुभद्राकुमारी चौहान तक जैसे इतिहास से ओझिल लेखिकाओं में राष्ट्रीय भावना और नारी-जागरण की जुगलबंदी देखी जा सकती है। डॉ. सुमन राजे के अनुसार भारतेन्दु युग का प्रथम प्रभाव राजरानी देवी में मिलता है।[2] उनकी राष्ट्रीय चेतना की कविताओं में नेतृत्व करनेवाली भी 'स्त्री' है। पूरे भारतीय इतिहास में इस तथ्य की अनदेखी हुई है

"देवियों ! क्या पतन अपना देखकर
नेत्र से आंसू निकलते हैं नहीं ?
भाग्यहीना स्वयं को क्या लेखकर
पाप से कलुषित हृदय जलते नहीं।"[3]

'वंश परिचय' राजरानी देवी की बेहतरीन कविता है, जो राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की स्मरण दिला देती है। 'भारत भारती' के अंदाज में यह कविता भव्य भारत-भूमि के अतीत और वर्तमान के चित्र प्रस्तुत करती है। लाला भगवानदीन की पत्नी 'बुन्देलवाला' नयी चेतना की महत्वपूर्ण कवयित्री हैं और इसे पुष्ट करती हैं। आचार्य शुक्ल के समकालीन रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' के इस कथन से कि बुंदेलवाला को वही स्थान साहित्य में मिलना चाहिए जो भूषण का है।[4] उनकी बाल-कविता में भारत-भूमि की बंदना है। 'माता और पुत्र की बात-चीत' शीर्षक कविता में एक राष्ट्रप्रेमी मां अपने पुत्र को देशप्रेम का पाठ पढ़ाती है –

"हे प्यारे कदापि तू इसको तुच्छ श्याम रेखा मत मान।
यह है शैल हिमालय इसको भारत-भूमि पिता पहिचान।।
नेह सहित ज्यों पितु-पुत्री को सादर पालन करता है।
यह हिम-गिरि त्योंहि भारत-हित पितृ-भाव-हिय धरता है।"[5]

'मां' रूपी स्त्री का ऐसा चरित्र हिन्दी कविता में दुर्लभ है। बुंदेलवाला की तरह तोरन देवी शुक्ल 'लली' और पुरुषार्थवती देवी की राष्ट्रीय चेतना भी नयी पीढ़ी की ओर उन्मुख है। इन दोनों कवयित्रियों ने राष्ट्रीय नवजागरण का प्रभाती का गीत गाया है –

"आदर्शों से परिपूर्ण 'लली'

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

अगणित वीरों की त्यागभूमि।
अब उठो चलो बढ़ चलो वीर!
है यही तुम्हारी कर्मभूमि" [6]

- तोरन देवी शुक्ल 'लली'

"उठो, उठो, साहस से वीरों,
मत मन में भय खाओ।
वीर वेष से सज्जित होकर,
रण-प्रांगण में जाओ।।
प्रलयंकर संगीत समर की
स्वर-लहरी में गाओ।"[7]

- पुरुषार्थवती देवी

स्त्री लेखिकाओं ने राष्ट्रीय नवजागरण को इतने व्यापक तौर पर आत्मसात किया है कि कहीं-कहीं वह परंपरा का अतिक्रमण करती हुई नजर आती है। परंपरा साक्षी है कि बलिदान के प्रसंग में वीरपुत्रों को ही याद किया जाता है, पहली बार कविता के इतिहास में यह कामना अंकित हुई है –

"जननी जन्म भूमि के हित में हो जाऊँ सहर्ष बलिदान
बनकर वीर-बालिका में भी कर दूं भारत का उत्थान,
वीणा की प्रतिध्वनि में मिलकर गाऊँ मां का गौरवगान,
रहूं मात-सेवा में तन्मय, चाहे संकट पड़े महान।"[8]

यह कविता मेरठ की कवयित्री हूर 'मेरठी' की है, जिसे सुमन राजे ने अपनी पुस्तक 'इतिहास में स्त्री' में जगह दी है। हूर 'मेरठी' की मूल चिन्ता यह है कि स्त्री की निष्क्रिय छवि को कैसे तोड़ा जाए। वह सामाजिक विषयों के केंद्र में स्त्री के स्थापित कर सीधे पुंसवादी सत्ता को चुनौती देती है। उनकी कविता में महिलाएं वतन की ताकत के रूप में दर्ज होती है। वह बड़ी आत्मीयता के साथ सभी 'बहनों' को एकजुट करने के लिए जागरण-गान प्रस्तुत करती हैं –

"जागो, जागो बहिनो जागो
क़ौम है मुर्दा जान तुम्हीं हो, जीने का सामान तुम्हीं हो।
शान है तुमसे शान तुम्हीं हो, शान तुम्हीं हो आन तुम्हीं हो।"[9]

सुभद्राकुमारी चौहान, जिन्होंने राष्ट्रीय कविता के साथ वात्सल्य भाव को एक व्यापक अर्थ दिया। डॉ. सुमन राजे ने इस एक पंक्ति में मानो सुभद्रा जी के सृजन को एकीभूत कर दिया है- "वे अपनी कविताएं जीवन की तरह जीती है और जीवन कविता की तरह लिखती है।"[10] महादेवी वर्मा को रहस्यवादी कहा गया, उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित 'अग्निरेखा ' में देशप्रेम के गीत जो 'प्रभातफेरियों' में गाए जाते थे, जिनकी ओर डॉ. राजे ने ध्यान दिलाया है।[11] महादेवी के समकालीन ऐसी अनेक कवयित्रियां हैं, जिन्हें साहित्येतिहास में आना चाहिए। रामेश्वरी देवी के गीत 'चरखा चलवा दो घर-घर में, अब मैनचेस्टर का नाम न लो'[12] की संवेदना उल्लासमयी है। विद्यावती कोकिल की 'भिखारिन' तथा 'धासवाली' कविता में स्त्री मजदुरनी का मार्मिक चित्रण एवं धनिक वर्ग के प्रति कटाक्ष हैं। मंगला बालूपुरी की देशभक्ति पूर्ण बिलदानी भावना के दर्शन उसकी 'वीरपतनी' शीर्षक कविता में होते हैं जब वह अपने पति को कुंकुम केसर का तिलक लगाकर 'बलिपन्थी वीरों की टोली' में 'बलिवेदी' की ओर जाने को प्रोत्साहित करती है-

"अगर सुनूंगी, मेरा प्रियतम रण में अमर शहीद हुआ
तो समझूंगी, मेरा जीवन प्यारे, परम पुनीत हुआ।"[13]

होमवती देवी, सत्यवती शर्मा, रणछोर कुंवरि, तारा पांडे आदि अनेक कवयित्रियां हैं जिनकी लेखन परंपरा का स्थान इतिहास में अंकित नहीं हुआ है। ये स्त्रियां अपने लेखन के माध्यम से

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

पुरुषवादी इतिहास में सेंध लगाती है। इन स्त्री लेखिकाओं की उपस्थिति से इतिहास का ढांचा ही कुछ और हो जाता है।

निष्कर्ष:

बहरहाल, राष्ट्रीय नवजागरण एवं आधुनिकता का स्वागत स्त्री लेखिकाओं ने जोशो-खरोश के साथ किया है। स्त्री कविताओं में स्त्री चाहे मां, पत्नी, पुत्री या योद्धा के रूप में हो, समर-भूमि में अपना सर्वस्व बिलदान कर देने को आतुर हैं। यह कहें तो कोई अतियुक्ति नहीं होगी कि राष्ट्रीय नवजागरण के दौर की स्त्री-कविताएं जोश, आक्रोश एवं क्रांति की आग है।

संदर्भ-सूची:

1. राजे, सुमन, 'हिंदी साहित्य का आधा इतिहास', भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2003, पृ.-286
2. राजे, सुमन, 'इतिहास में स्त्री', भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2012, पृ.-71
3. चतुर्वेदी, जगदीश्वर, 'स्त्री काव्यधारा', अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006, पृ.-229
4. सिंह, वीरेन्द्र, 'संदर्भों की सापेक्षता', स्वराज प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2006, पृ.-210
5. चतुर्वेदी,जगदीश्वर, 'स्त्री काव्यधारा', अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2006, पृ.-192
6. चतुर्वेदी,जगदीश्वर, 'स्त्री काव्यधारा', अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2006, पृ.-173
7. चतुर्वेदी,जगदीश्वर, 'स्त्री काव्यधारा', अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2006, पृ.-181
8. राजे, सुमन, 'इतिहास में स्त्री', भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2012, पृ.-73
9. राजे, सुमन, 'इतिहास में स्त्री', भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2012, पृ.-73
10. राजे, सुमन, 'हिंदी साहित्य का आधा इतिहास', भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2003, पृ.-252
11. राजे, सुमन, 'हिंदी साहित्य का आधा इतिहास', भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2003, पृ.-254
12. यादव पद्म, डॉ. पदमसिंह, 'हिंदी कवयित्रियों का इतिहास', साहित्य-संगम, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-2007, पृ.-73
13. यादव पद्म, डॉ. पदमसिंह, 'हिंदी कवयित्रियों का इतिहास', साहित्य-संगम, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-2007,पृ.-85

Cite This Article:

डॉ. रजक अ. प (2024). *भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन और हिंदी स्त्री- लेखन*, In Electronic International Interdisciplinary Research Journal: Vol. XIII (Number I, pp. 12–16) **EIIRJ.** https://doi.org/10.5281/zenodo.10646470